ISSN : 2393-9362

# साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed
Journal

वर्ष-ग्यारह,अंक 43 । जुलाई -सितम्बर 2024

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

## सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट सागर के पदाधिकारी गण

बैठे हुए (बाएँ से दाएँ ) – डॉ.लक्ष्मी पाण्डेय (न्यासी),पं.शुकदेव प्रसाद तिवारी (सचिव )
श्री लक्ष्मी नारायण यादव पूर्व सांसद सदस्य लोकसभा (न्यासी),
श्री के. के. सिलाकारी,एडवोकेट (अध्यक्ष),डॉ. सुरेश आचार्य (न्यासी)
श्री जी.एल. छत्रसाल (सह सचिव),डॉ.मीना पिम्पलापुरे (न्यासी)

पीछे खड़े हुए (बाएँ से दाएँ ) – श्री सुधीर कुमार तिवारी (न्यासी), श्री जवाहरलाल चौरसिया (न्यासी)
श्री राजू चौबे (कर्मचारी), सरदार जितेन्द्र सिंह चावला(न्यासी),श्री डी.एन.चौबे (कार्यालय प्रभारी)
श्री जगदीश माहेश्वरी(न्यासी), श्री आर.एस.यादव (न्यासी),श्री रमेश कुमार सैनी (कर्मचारी)

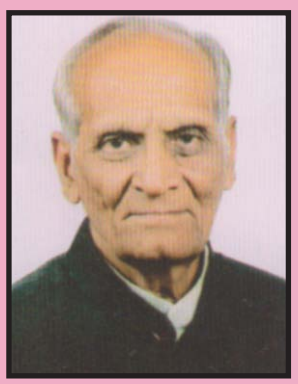

अध्यक्ष
के.के.सिलाकारी (एड.)

साहित्य सरस्वती के सहृदय
पाठकों को गुरु पूर्णिमा,
स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन,
कृष्ण जन्माष्टमी तथा
राष्ट्रीय हिंदी दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ ।

सचिव
पं.शुकदेव प्रसाद तिवारी

# साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - ग्यारह, अंक - 43, जुलाई-सितम्बर 2024

प्रधान संपादक

**डॉ. सुरेश आचार्य**

संपादक

**डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय**

उप-संपादक

**प्रो. पुरुषोत्तम सोनी**

**डॉ. ऋतु यादव**

**व्यवस्था एवं परामर्श**

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

**ISSN - 2393-9362**
**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704**
Peer reviewed journal वर्ष - ग्यारह, अंक - 43, जुलाई-सितम्बर 2024

**विषय विशेषज्ञ समिति**

**प्रो. सुरेश आचार्य,** अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

**डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय,** डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

**डॉ. मधु संधु,** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

**डॉ. राजीव रंजन गिरी,** हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

*आवरण*
असरार अहमद सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
**अनुज्ञा बुक्स**
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

## अनुक्रम


5 सम्पादकीय – सुरेश आचार्य

7 हस्तक्षेप – लक्ष्मी पाण्डेय

**धरोहर**

11 **मोहनदास करमचंद गाँधी –** भाषण : कृष्णनाथ कॉलेज, बहरामपुर में

17 **प्रेमचंद–** पंच परमेश्वर

**लेख**

24 **डॉ. संजय नाईनवाड–** समकालीन आदिवासी कविता में मानवाधिकार

31 **डॉ. चंचला दवे–**समसामयिक अद्वितीय सॉनेट

34 **प्रो. स्मृति शुक्ल–**जीवन मर्म के गहरे साक्षात की कहानियाँ

**आत्मकथा अंश**

40 **प्रकाश मनु–**सर्दियों की धूप और तालाब का किनारा

**यात्रा संस्मरण**

49 **डॉ. तनूजा चौधरी–**नीले समुद्र का आइलैण्ड-थाईलैण्ड

**कहानियाँ**

56 **श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया–** बोड़ा-बालम

69 **सुधा ओम ढींगरा–** वे अजनबी और गाड़ी का सफ़र

78 **हरि नारायण गुप्त–** भवितव्य

83 **डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'–** लोकल बस में

**लघुकथाएँ**

87 **श्यामबाबू शर्मा**

**कविताएँ / गजलें**

4 माधव शुक्ल 'मनोज'

77 पं. गिरि मोहन 'गुरु'

86 डॉ. जी. एस. चौबे

88 अशोक वाजपेयी

89 शरद सिंह

89 स्व. शिवकुमार श्रीवास्तव

90 अशोक अंजुम

90 रश्मि रमानी

91 डॉ. संध्या टिकेकर

92 प्रगति गुप्ता

96 माधुरी राऊलकर

101 पद्मा तिवारी

**समीक्षाएँ**

93 **जसविन्दर कौर बिन्द्रा** – चलो फिर से शुरू करें (कहानी संग्रह – सुधा ओम ढींगरा)

97 **राजनारायण बोहरे** – बोलते पत्थर (उपन्यास – रामभरोसे पाठक)

102 **डॉ. मधु संधु** – ऐ वहशते-दिल क्या करूँ (संस्मरणात्मक उपन्यास – पारुल सिंह)

106 **वैद्यनाथ उपाध्याय** – स्याह पर्दों के ऊपर (लेखक – रति सक्सेना)

108 **परिक्रमा**

109 **प्रतिक्रिया**

## कविताएँ : *माधव शुक्ल 'मनोज'*

### देश

देश अपना है
घर अपना है
देश में अपना घर है
मगर, घर में अपना देश नहीं है।

### समय के साथ

अनकही प्रार्थनाएँ
कितनी बार जन्मीं
हम अनलिखे
पंछी के परों में बँधे
उड़ते रहे...
हम समय के साथ
अपनी ज़िंदगी पकड़े
स्वयं की छाँव से सम्बन्ध जोड़े
जुड़ते रहे।

### मुट्ठियों में

रत्न लेकर हाथ में
मैं क्या करूँगा?
मुट्ठियों में कस चुका हूँ यत्न।
रात : मेरी आँख में कुछ भी नहीं
बस नींद के ऊपर रखा है पाँव
मेरी मुट्ठियों में–
चल रहा कोई...

### रात्रि

आँखों के घर मुँदे
अँधियारों से पुरे
काजल की कोठी में
एक रत्न बन्द।
भीतर है मौन;
शायद, वह अपना है।

### साँझ

गुलाब रंग में
टूटता दिन
धीरे-धीरे स्याह...
आह,
मेरी खामोशी
पहाड़ पर फिसलती...
गहरी खाई में गिरती है।

### साँझ चिड़िया

नीची तलहटी की तरफ
चहचहाती साँझ चिड़िया
दूसरे गाँव की झील में
सूर्य चुगती उड़ गई है।
गेरुआ पंख पर चढ़
साँवलापन जा चुका है दूर...
काली लकीरों पर चली आती
तारों की सुहागिन
मैं अपने कक्ष में
झिलमिलाता जल रहा हूँ।

चारों पहर की आहटें
कुलबुलाती मेज़ पर
सिर्फ एक सन्नाटा पसारे हाथ
सो रहा मुझ पर।
मेरी आँख के नीचे
दबी है एक दुनिया
मेरे गाँव की।

### अग्नि का आकाश

सुलगती है
एक सन्ध्या वक्ष पर
एक दीपक में समाहित हूँ
मन से उजाला निकलता है
स्मरण में
अग्नि का आकाश
बुझता नहीं, मिटता नहीं।

### सपना

एक काँटा
चार पत्ते
चुभ रही हैं नोक
हरिया रही है पत्तियाँ
फूल होकर एक सपना
टूटता है रोज़...

### एक चाँद टूटा है

एक चाँद टूटा है।
एक चाँद ऊगा है।

रंगों में रँगती हैं
आँखों की पलकें दो
एक श्वेत मोती है।
एक लाल मूँगा है।
एक चाँद टूटा है, एक चाँद ऊगा है।

संध्या के अधरों पर
कोलाहल थोड़ा है।
रात बड़ी; खामोशी
फूट पड़ा फोड़ा है।
लोगों से लोगों तक
शब्द बहुत ज्यादा हैं;
कोई अनबोला है;
कोई मौन गूँगा है।
एक चाँद टूटा है, एक चाँद ऊगा है।

**साभार– नीला बिरछा**

**सम्पादकीय**

# अब की बार : चार सौ पार

अकबर इलाहाबादी का एक शे'र पेशे-खिदमत है। यह विश्व में लोकतंत्र की असल परिभाषा है।

*जम्हूरियत वो तर्ज़े हुकूमत है, के जिसमें।*
*बंदों को गिना करते हैं तोला नहीं करते।।*

सही है। भारत के संदर्भ में तो यह मामला इतना फिट है कि 'अश-अश' करते हुए लोग इस शेर को सिर माथे उठाते हैं। अभी-अभी भारतीय लोकतंत्र ने अपना ऐसा विजन दिखाया कि न सत्तासीन लोगों को गरिमा के आधार पर मजबूत किया और न विपक्ष को छोड़ा। हड़बड़ी में मुझे तो हर बार एक और शे'र याद आता है। जिसे मेरे एक स्वर्गवासी मित्र श्री मदन सिंह तोमर ने लिखा था–

*छज्जे पै रहने वाले जीने पै आ गए।*
*रफ्ता-रफ्ता वो अपने करीने पै आ गए।।*

एक शे'र ही चुनाव का पूरा खाक़ा स्पष्ट कर देता है। मैं मूलतः गद्य की सराहना करता हूँ कि भैया वोटर और बादल दोनों एक से स्वभाव वाले होते हैं। कई बार मतदाताओं और बादलों दोनों की जबरदस्ती देखी है। अभी-अभी हुए चुनावों में मोदी जी के प्रचार तंत्र ने एक नये नारे के साथ नृत्य किया कि 'अबकी बार – चार सौ पार' सो कुल दो सौ चालीस के आस-पास सिमट गए। उधर विपक्ष इतना व्याकुल हो गया कि 'पाँच सौ बयालीस' के सदन में अपनी निन्यानबे सीटों को चार सौ बयालीस से ज्यादा समझता रहा। रिजल्ट देखकर उनकी गलतफ़हमी तो खैर दूर हो गई। साथ-साथ सरकार बनाने का आश्वासन भी व्यर्थ हो गया। अब सब पड़े हैं उल्टे और याद कर रहे हैं कि लोकतंत्र में मुंडियाँ गिनी जाती हैं तौली नहीं जातीं। वोटरों का मन सत्ता और विपक्ष दोनों को ठीक करने का रहा होगा। मगर किसी ने ध्यान नहीं दिया। चार सौ पार की दुर्गति देखकर लोग नारे लगाना भूल गए। कई तो सोचने लगे मैं कौन हूँ? मैं कहाँ हूँ। मुझे ये होश नहीं। वोटर बरसे और अपने मन-मुताबिक बरसे, इतना बरसे कि चार सौ पार का नारा बहा ले गए। आखिर अपनी प्रकृति कोई कैसे भूलेगा। घमंड से बरसने वाले बादलों से तो 'श्री राम' जी भी डर गए थे। उन्होंने भैया लक्ष्मण से कहा– घमंड से भरे घनों के गरजने से मेरा प्रियाहीन मन डर जाता है।

*घन-घमंड नभ गरजत घोरा। डरपत प्रियाहीन मन मोरा।।*

इसी तरह वोटरों का रवैया है। लोकसभा के चुनावों में सारी पार्टियाँ अपने-अपने वोटर-ब्लाक सम्हालने दौड़ीं मगर मैंने यह नजारा देखकर मामला समझ लिया कि पक्ष-विपक्ष दोनों की तबीयत ठीक करने वाले वोटरों ने जादू दिखाने का फैसला कर लिया है। मेरी आशंका ठीक निकली। दोनों पक्षों का बुखार एक ही गोली से ठीक हो गया। कई लोगों का हाल ऐसा हो गया कि– 'खुदा ही मिले न विसाले– सनम। उधर के रहे न इधर के रहे। न वे चार सौ के पार पहुँचे न ये सौ क्रास कर पाए। सुब्हान अल्लाह। मैं तो वोटर और बादल दोनों से डरता हूँ। वोटरों और बादलों ने अपना-अपना दायित्व बखूबी निभाया। आखिर संविधान ने ही रास्ता दिखाया कि हम भारत के लोग– एक दूसरे को बखूबी जानते, समझते और पहचानते हैं। चुनाव